Hindi
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी-अस्मिता की तलाश: 'गबन' और 'निर्मला' के संदर्भ में

•कुमारीसुकन्या• सोनल• अंजलीकुमारी
• शरणसहेली

Received : November 2011
Accepted : March 2012
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : *मुंशी प्रेमचंद को हिन्दी-साहित्य में उपन्यास - सम्राट् के रूप में जाना जाता है। उनका साहित्य उनके व्यक्तित्व से भी अधिक महान् है। कलम के इस सिपाही का जीवन उनके उपन्यासों के पात्रों की तरह ही संघर्षपूर्ण रहा। क्रांति के अग्रदूत प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी-जाति पर हो रहे अत्याचारों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है, जो समाज के कड़वे सच को दर्शाता है। हमने उनके उपन्यासों में 'गबन' और 'निर्मला' में नारी-अस्मिता की तलाश व प्रासंगिकता को लेकर परियोजना-कार्य तैयार किया है। इसमें विविध कॉलेजों की छात्राओं व गृहिणियों को लेकर प्रश्नावली तैयार की गयी है, जो प्रासंगिकता के स्तर को प्रदर्शित करती है। प्रोजेक्ट के रूप में हम कल और आज की नारी की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।*

संकेत शब्दः- *उपन्यास-सम्राट्, कलम का सिपाही, क्रांति के अग्रदूत, स्वप्न-द्रष्टा, युग स्रष्टा, नारी-अस्मिता, साहित्यिक अवदान, राष्ट्र-गौरव।*

कुमारी सुकन्या
बी०ए०-तृतीयवर्ष(2009–2012),हिन्दी(प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

सोनल
बी०ए०-तृतीयवर्ष(2009–2012),हिन्दी(प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अंजली कुमारी
बी०ए०-तृतीयवर्ष(2009–2012),हिन्दी(प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज, बेलीरोड,पटना– 800 001, बिहार,भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

भूमिका:

''हममें से जिन्हें सर्वोत्तम शिक्षा और सर्वोत्तम मानसिक शक्ति मिली है, उन पर सबके प्रति उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी भी है।

हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।''

– प्रगतिशील लेखक संघ' के लखनऊ अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए प्रेमचंद का वक्तव्य (सन् 1936)